शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

'रामचरितमानस' में प्रयुक्त 'कथानक रूढ़ियाँ'

डॉ० राजश्री सी-आर
अध्यक्ष, भाषा विभाग, डॉ० जी.आर., दामोदरन कॉलेज ऑफ साइंस, कोयम्बटूर-१४

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

'रामचरितमानस' में प्रयुक्त 'कथानक रूढ़ियाँ'

- डॉ० राजश्री सी-आर

कथानक रूढ़ि या अभिप्राय (Motif) उस शब्द अथवा एक साँचे में ढले हुए उस विचार को कहते हैं, जो समान परिस्थितियों में अथवा समान मनःस्थिति और प्रभाव उत्पन्न करने के लिए किसी एक कृति अथवा एक ही प्रकार की विभिन्न कृतियों में बार-बार आता है। प्रस्तुत शोध पत्र में अध्येता ने 'रामचरितमानस' में वर्णित विभिन्न कथानक रूढ़ियों को प्रसंग के साथ उद्धृत किया है।

विषय संकेत:- *संस्कृति, आकाशवाणी, रामचरितमानस, कथानक रूढ़ि, कथा अभिप्राय*

भारत भारत की गरिमामयी संस्कृति और सभ्यता एक तरफ है तो दूसरी तरफ अंधविश्वास और रूढ़िबद्ध परंपरा का प्रचलन है। अंधविश्वास और रूढ़िबद्धता न चाहते हुए भी हमारे समाज का अटूट अंग बन गया है। शगुन देखना, राहुकाल में कार्य को स्थगित करना, गाड़ियों और वाहनों में नींबू, शंख और काले बाल लटकाना जैसे छोटी-छोटी बातें हमारे दैनिक जीवन को बहुत प्रभावित करती हैं। इन विश्वासों के पीछे कोइ निश्चित वैज्ञानिक कारण भले न हो किन्तु उनकी स्थिति अकाट्य है। लोक रचनाकार इन विश्वासों की उपेक्षा नहीं कर सकते।

भारत वर्ष की धर्म और हमारी संस्कृति पूर्णतया नष्ट नहीं हुई। स्वतंत्र संघर्ष में कई-कई पीढ़ियाँ तथा धर्म संस्कृतियाँ नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है, किन्तु भारत का स्वाधीनता संघर्ष विश्व इतिहास का अद्भुत संग्राम है, जिसमें स्वाधीन होने की भावना ज्यों-ज्यों प्रबल हुई अपने धर्म व संस्कृति की सुरक्षा की भावना भी त्यों-त्यों उग्र उग्रोतर होती चली गई। तुलसीदास का आगमन हमारे समाज के लिए एक वरदान था। जिस समय तुलसी का उद्भव हुआ, इस क्षेत्र की जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। तुलसी ने नि:शंक भाव से हिन्दु-धर्म तथा संस्कृति का गुणगान करके अपनी परंपराओं के प्रति खो रहे जनता के आत्मविश्वास का पुनरुद्धार किया। यह कवि अपने आराध्य देव के गुणगान में इतने तल्लीन हो गए कि अपने विषय में कुछ भी कहने का अवसर उन्हें मिला ही नहीं। उनके आराध्य देव श्रीराम के उत्तम गुणों पर प्रकाश डालना ही उनका लक्ष्य था। किन्तु उन्होने लोक भावनाओं की तनिक भी उपेक्षा नहीं की। अवतारी पुरुष भगवान श्रीराम में मानवीय गुणों का भी समावेश करके उनके व्यक्तित्व को तुलसीदासजी ने उपयुक्त बनाया है। स्वांत: सुखाय उन्होंने इसकी रचना की है। यह एक साथ रसात्मक काव्य ग्रंथ तथा नीति-आचार-व्यवहार ग्रंथ के साथ-साथ लोक रचना भी है। इसलिए तुलसी की कृति रामचरितमानस विश्व वाङ्गमय में अपनी उपमा आप है । तुलसी के राम अवतारी पुरुष थे। अर्थात् नर भी थे और नारायण भी। उन्होंने अपने काव्य द्वारा नर रूप नारायण ऐसे कुछ अमिमानुषिक कार्य को संपन्न कराकर समाज में कुछ उत्तम आदर्शों को प्रतिष्ठापित करना अपना जीवनोद्देश्य माना। इसके लिए उन्होंने अपने राम को शीलमूर्ति के रूप में चित्रित किया।

काव्य की कथावस्तु में गति एवं सरसता लाने की दृष्टि से कवि लोकाश्रित एवं लोक प्रचलित घटनाओं का प्रयोग करते हैं। अनेक कवियों द्वारा व्यवहृत होने के कारण इन्हें कथानक-रूढ़ियाँ कहते हैं। तुलसीदास जीने 'रामचरितमानस' में कुछ कथानक-रूढ़ियों का प्रयोग किया है। 'मानस' में कथानक रूढ़ियाँ न केवल सोद्देश्य अपितु सार्थक रूप में व्यवहृत हुई हैं। 'रामचरितमानस' में निम्नांकित कथानक-रूढ़ियाँ प्रयोग में आयी हुई हैं:-

1. रूपपरिवर्तन
2. आकाशवाणी
3. भगवान का प्रयोग तथा अंतर्धान होना।
4. अलौकिक-व्यक्ति अथवा देवताओं द्वारा दुश्कर कार्य के संपादन में सहायता।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

'रामचरितमानस' में प्रयुक्त 'कथानक रूढ़ियाँ'

डॉ० राजश्री सी-आर
अध्यक्ष, भाषा विभाग, डॉ० जी.आर., दामोदरन कॉलेज ऑफ साइंस, कोयम्बटूर-१४

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

5. तपस्या भंग करने के हेतु अप्सराओं का जाना।
6. ज्ञात अथवा अज्ञात में हुए अपराध के फलस्वरूप देवी-देवताओं का श्राप।
7. पूर्व-जन्म की स्मृति।
8. फलादि द्वारा पुत्र-जन्म।
9. पाषाण का जीवित हो उठना।
10. प्रतीकात्मक अथवा भविष्य सूचक स्वप्न।
11. शकुन।
12. सिद्धियों द्वारा असंभव कार्यों का संपादन।
13. श्वेत केश।
14. मार्गवरोध।
15. आत्महत्या की धमकी।
16. सांकेतिक भाषा।
17. जादू का युद्ध।
18. पशु-पक्षी द्वारा रक्षा या सहायता।
19. बल का स्मरण।
20. जीवन निमित्त का उल्लेख।
21. मृत व्यक्ति का जीवित हो उठना।
22. जल पीते समय असंभावित घटना का घटना।
23. जिज्ञासा समाधान के लिए अन्य के पास भेजना।

1- रूप परिवर्तन-

'मानस' में रूप-परिवर्तन के कई प्रसंग आये हैं।

अ. राम के ईश्वरत्व की परीक्षा लेने के लिए सती ने सीता का रूप धारण किया था।

आ. नारद-मोह के प्रसंग में नारद ने भगवान विष्णु से उनका रूप माँगा। लेकिन विष्णु ने उन्हें वानर का रूप दिया, जिसे धारण कर वे शीलनिधि राजा को कन्या के स्वयंवर में गए।

इ. राम के सहायतार्थ देवगण रीछ और वानरों का रूप धारण करते हैं।

वेशपरिवर्तन- रूप परिवर्तन से मिलती जुलती कथानक-रूढ़ि है वेशपरिवर्तन सीताहरण के समय रावण यती का वेश धारण करता है।

2- आकाशवाणी-

मानस में आकाशवाणी के भी पर्याप्त प्रसंग हैं। बालकाण्ड में सती द्वारा सीता का रूप धारण करने की बात मालूम होने पर शिव सती को सीता के समान ही समझ कर उस जन्म में उनसे पत्नी रूप में भेंट न करने का संकल्प कर लेते हैं। उनके इस संकल्प की सूचना सती को आकाशवाणी के द्वारा मिलती है। इस आकाशवाणी से सती को मालूम हो गया कि शंकर को उनके कपट के बारे में ज्ञात हो गया है।

प्रतापभानु के प्रसंग में कपटी मुनि द्वारा तैयार की गई रसोई जब ब्राह्मण खाने को तैयार होते हैं तभी आकाशवाणी होती है।

3- भगवान का प्रकट तथा अंतर्धान होना-

1. शिव को पार्वती से विवाह करने के लिए उपदेश देने हेतु भगवान प्रकट होते हैं और फिर उसके बाद अंतर्धान होते हैं।

2. नारद-प्रसंग में मोहग्रस्त नारद को उचित मार्ग पर लाने के लिए उनकी स्तुति पर भगवान प्रगट होते हैं और नारद द्वारा रूप माँगे जाने पर, उन्हें आश्वासन देकर अंतर्धान हो जाते हैं।

4- अलौकिक व्यक्ति अथवा देवताओं द्वारा दुष्कर कार्य के संपादन में सहायता ...

'मानस' में इस रूढ़ि का प्रयोग दो रूपों में हुआ है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

'रामचरितमानस' में प्रयुक्त 'कथानक रूढ़ियाँ'

डॉ० राजश्री सी-आर
अध्यक्ष, भाषा विभाग, डॉ० जी.आर., दामोदरन कॉलेज ऑफ साइंस, कोयम्बटूर-१४

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

क. पहला रूप वह है जहाँ अलौकिक शक्तियाँ सीधे नायक की सहायता करती हैं।

ख. दूसरा रूप वह है जहाँ शक्तियाँ नायक के विरोधियों की शक्ति को कम करके नायक की अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करती हैं।

क. का उदा-प्रथम प्रकार का प्रयोग बालकांड में शिव-पार्वती- विवाह के प्रसंग में हुआ है। 'तारक' असुर से देवों की रक्षा करने में शंभु के वीर्य से उत्पन्न पुत्र ही समर्थ होगा-ऐसा वहाँ उल्लिखित है। तारक के अत्याचारों से भयभीत देवताओं को ब्रह्मा ने ही बचाव का उपाय सुझाया। कार्तिकेय के जन्म लेने पर उन्हीं के द्वारा तारकासुर का काम तमाम हो जाता है।

ख. का उदा-राम-वनवास प्रसंग में शारदा द्वारा मंथरा की मति फेरी गयी है। अन्यथा राम-जन्म का हेतु सार्थक नहीं होता। राम को राक्षसों सहित रावण का वध करके पृथ्वी का भार उतारना था। उसके लिए उन्हें वन जाना ज़रूरी था। मंथरा की मति फेरकर कैकेयी द्वारा यह कार्य संपन्न किया गया।

5- तपस्या भंग करने हेतु अप्सराओं का जाना-

'मानस' में कामदेव के सहायक के रूप में अप्सराओं का उपयोग हुआ है। शंभु और नारद की तपस्या भंग करने जाते समय कामदेव ने अप्सराओं को अपने अस्त्र के रूप में साथ लिया है।

6- अपराध और उसके लिए शाप-

जान बूझकर किए गए अपराधों के लिए शाप देने का सर्वप्रथम वर्णन राम-जन्म के कारणों के प्रसंग में हुआ है। जालंधर राक्षस से युद्ध करते समस्त देवता थक गए। कोई भी उसे जीत न सका। जालंधर की पत्नी के कारण ही देवता उसे मार नहीं सके थे। विष्णु ने जालंधर का रूप धारण कर उसके सतीत्व को भंग किया। इससे जालंधर तो मारा गया, लेकिन विष्णु को उस सती का शाप भोगना पड़ा। उसी जालंधर ने रावण के रूप में विष्णुरूप राम की पत्नी का अपहरण कर अपना बदला चुकाया।

श्रवण कुमार की हत्या दशरथ से अज्ञान में ही हुई थी और अंधे तपस्वियों ने दशरथ को पुत्र-वियोग में ही प्राण त्यागने का श्राप दिया था।

7- पूर्व जन्म की स्मृति-

पूर्वजन्म की स्मृति का उल्लेख केवल काकभुषुंडि के प्रसंग में ही हुआ है। वहाँ भी उसे अपने पूर्वजन्मों तथा ज्ञान का स्मरण शिव के अनुग्रह से ही होता है। रामकथा के अंत में वह गरुड़ को उसकी शंका के निवारणार्थ अपने पूर्वजन्मों की कथा सुनाता है।

8- फलादि द्वारा पुत्र-जन्म-

राजा दशरथ को कोई संतान नहीं हुई थी। पुत्रोष्टि यज्ञ से प्राप्त हवि द्वारा उन्हें संतान उत्पन्न होने की बात कही गई है। 'मानस' में फल के स्थान पर हवि का प्रयोग किया गया है।

9- पाषाण का जीवित हो उठना-

विश्वामित्र द्वारा निर्देश दिये जाने पर, शिला रूप में मार्ग में पड़ी गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या को श्रीराम अपने चरणों की रज के स्पर्श मात्रा से सुन्दर नारी के रूप में जीवित कर देते हैं।

10- प्रतीकारात्मक अथवा भविष्य सूचक स्वप्न-

'मानस' में भरत तथा त्रिजटा के स्वप्नों के वर्णन है। भरत अपने ननिहाल में अवध में घटने वाली अप्रिय घटनाओं की सूचना स्वप्नों में पाते हैं। ये भयानक स्वप्न किसी भयंकर घटना के घटने की सूचना देते हैं और शीघ्र ही भरत को उन सब अप्रिय घटनाओं का पता चलता है।

11-. शकुन-

अ. सीता द्वारा गौरी की पूजा करके उनसे वरदाने माँगने पर 'माला का खिसाना' और 'मूर्ति का मुस्कुराना' शुभ शकुन है।

आ. बारात सजाकर दशरथ के अयोध्या से निकलने पर वैसे ही शुभ शकुन होते हैं। वहाँ तुलसीदास जी ने सभी मांगलिक शकुनों को एकत्रित कर दिया है।

इ. मामा के घर रहते हुए, भरत को अपशकुनों के द्वारा 'अयोध्या में कुछ अशुभ हुआ है' का संकेत मिलता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

'रामचरितमानस' में प्रयुक्त 'कथानक रूढ़ियाँ'

डॉ० राजश्री सी-आर
अध्यक्ष, भाषा विभाग, डॉ० जी.आर., दामोदरन कॉलेज ऑफ साइंस, कोयम्बटूर-१४

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

12-. सिद्धियों द्वारा असंभव कार्यों पर संपादन-

'मानस' में नारद और रावण को सर्वत्र-गमन की शक्ति से युक्त बताया गया है। नारद ने अपने तप से तथा रावण ने ब्रह्मा के वरदान से यह शक्ति प्राप्त की थी। तप या शुचिता के प्रभाव से चमत्कारपूर्ण कार्य करने के उदाहरण भी मानस में मिलते हैं। सीता ने सिद्धियों के प्रभाव से जनकपुर में आयी बारात तथा दशरथ की पहुनाई करायी थी और राम के अतिरिक्त कोई भी इस भेद को नहीं जान पाया था।

राम को मनाने वन जाते समय भरत की पहुनाई भी अगस्त्य ऋषि ने अपनी तपस्या के प्रभाव से करायी थी।

13-. श्वेत केश-

दशरथ राज्य करते जा रहे हैं। परिवर्तन या नवीतना का कोई संकेत नहीं है। लेकिन एक दिन दरबार में बैठे हुए आइने में अपना मुख देखते उन्हें दिखायी देता है कि कान के पास बाल स्केद हो गए हैं। इसी से उन्हें राम का राज्य दे कर वन जाने की प्रेरणा मिलती है।

14- मार्गावरोध-

लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर जब हनुमान संजीवनी लाने जाते हैं उस समय रावण कालनेमि को उनका मार्ग रोकने के लिए भेजता है। कालनेमि ने मुनि का वेश बना कर हनुमान को रोकना चाहा था।

15- आत्महत्या की धमकी-

'मानस' में कैकेयी के द्वारा इसी प्रयोग के माध्यम से राम को वनवास की आज्ञा दिलायी गयी है। युवराज-पद पाने वाले राम को प्रातः होते ही वन जाने की आज्ञा दिलाने के लिए कैकेयी ने दशरथ जी को अपने मरने और उनके अपयश होने की धमकी दी।

16- सांकेतिक भाषा-

'मानस' में सांकेतिक भाषा का प्रयोग शूर्पणखा के प्रसंग में हुआ है, जिसका परिणाम ही सीताहरण और राम-रावण युद्ध है। शूर्पणखा के रूप से सीता को डरी हुई जानकर राम ने संकेत से ही लक्ष्मण को उसकी नाक-कान काटने की आज्ञा दी।

17- जादू का युद्ध-

'मानस' में राम और राक्षसों के युद्ध में जादू के युद्धों का प्रयोग किया गया है। राम-रावण के युद्ध-प्रसंग में मेघनाद और रावण दोनों ही अजेय होने के कारण करते हैं, लेकिन उनका यज्ञ सफल नहीं होता, वानर उसे नष्ट-कष्ट कर देते हैं। तब वे माया-युद्ध करते हैं। मेघनाद आकाश में उड़कर वहीं से राम की सेना पर अंगारों की वर्षा करता है, पृथ्वी से जल की धाराएँ फूट पड़ती है और पिशाचिनियाँ 'मारो-काटो' चिल्लाती हैं। कभी विष्ठा, पीव खून, बाल, हड्डियों की वर्षा होती है और कमी धूल से आकाश आच्छादित हो जाता है और चारों ओर अंधकार फैल जाता है, सभी व्याकुल हो जाते हैं। राम ने एक ही बाण से उस माथा को काट दिया-

18- पशु-पक्षी द्वारा रक्षा या सहायता-

सीताहरण के समय जटायु सीता को बचाने की चेष्टा करता है। लेकिन रावण उसके पंख काटकर उसे व्याकुल करके सीता को ले जाता है।

जटायु का भाई संशाति भी वानरों को सीता का समाचार दे कर उनकी पूरी सहायता है। 'मानस' में रीछ और वानर पशु ही हैं, जो राम की, सब प्रकार से सहायता करते हैं। हनुमान 'मानस' में राम की अँगूठी दिखाकर भी सीता को विश्वास नहीं दिला सके। उन्होंने अपने और राम के साथ होने की पूरी कथा कहकर सीता को आश्वस्त कर दिया।

19- बल का स्मरण-

'मानस' में जाम्बंवत ने हनुमान को उनके बल का स्मरण दिलाया है। समुद्र के किनारे बैठे हुए वानर-भालू पार जाने के लिए अपनी-अपनी शक्तियों को तौल रहे हैं। किसी को विश्वास नहीं है कि वह इस

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

'रामचरितमानस' में प्रयुक्त 'कथानक रूढ़ियाँ'

डॉ० राजश्री सी-आर
अध्यक्ष, भाषा विभाग, डॉ० जी.आर., दामोदरन कॉलेज ऑफ साइंस, कोयम्बटूर-१४

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

कठिन कार्य को कर सकेगा। हनुमान चुप हैं। उन्हें जाम्बवंत यह कहकर बल का स्मरण दिलाते हैं कि 'तुम्हारा जन्म ही इस कार्य के लिए हुआ है।' स्मरण दिलाते ही हनुमान पर्वताकार होकर समुद्र लांघने को तैयार हो गए।

20- जीवन-निमित्त का उल्लेख-

रावण का जीवन-निमित्त बाह्य-वस्तु में स्थिर न होकर उसकी नाभि में स्थित था। नामि का अमृतकुंड ही उसके जीवन का निमित्त था। बिना उस अमृत को सुखाए रावण को मारना असंभव था। राम ने कई बार रावण के सिर और बाहुओं को काटा, लेकिन रावण की मृत्यु नहीं हुई। विभीषण द्वारा भेद प्रकट करने पर जब राम ने उस अमृतकुंड को सुखा दिया तभी रावण की मृत्यु हुई।

21- मृत व्यक्ति का जीवित हो उठना-

सीता का पता लगाने को निकल अंगद, हनुमान आदि वानर उनका पता न पाकर, प्यास से व्याकुल हुए पानी की खोज में तपस्विनी के आश्रय में पहुँचे। उसने उन्हें आँखें मूँदने को कहा और उनके वैसा करने पर वे सब समुद्र के किनारे पहुँच गए। वहाँ उनकी भेंट संपाती से हुई जिसने सीता का पता बता कर हनुमान को लंका जाने को प्रेरित किया।

22- जिज्ञासा समाधान के लिए अन्य के पास भेजना-

राम के ईश्वरत्व पर संदेह होने पर उसके समाधान के लिए गरुड़ ब्रह्मा के पास जाते हैं। ब्रह्मा उनके संदेह को स्वयम् दूर न करके उन्हें शंकर के पास भेज देते हैं और शंकर काक भुसुंडी के पास। अंत में काकभुसंडि राम कथा सुनाकर गरुड़ के संदेह को दूर करते हैं।

इस प्रकार रामचरितमानस एक साथ रसात्मक काव्य ग्रंथ तथा नीति-आचार-व्यवहार ग्रंथ के साथ-साथ एक लोक रचना है। तुलसी की कृति रामचरितमानस की लोकप्रियता का प्रमुख कारण लोक विश्वासों को अपने काव्य में महत्व देना है। कार्य कारण नियम से मुक्त विश्वास को काव्य में महत्व देना तुलसी की लोक के प्रति आग्रह को व्यक्त करता है। लोकसंग्रह की यह भावना गोस्वामी तुलसीदास को एक महान कवि बनाती है।

संदर्भ-

1- श्रीरामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं0 2069
2- तुलसी, संपादक- सिंह, डॉ. उदयभानु, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993
3- हिन्दी साहित्य की भूमिका, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1998

SHODH SANCHAYAN